बस 'हिक' कहो!

एक तुर्की लोककथा

बस 'हिक' कहो!

एक तुर्की लोककथा

एक समय की बात है-उन दिनों की जब ईश्वर के बनाये अनगिनत जीव धरती पर रहते थे और अधिक बातें करना पाप समझा जाता था-उन्हीं दिनों एक नगर में एक व्यक्ति रहता था. उसका एक नौकर था, जो बहुत भोला-भाला था. उसका नाम था हसन.

हसन एक अच्छा नौकर था, बस उस में एक ही कमी थी. जो भी बात उससे कही जाती थी वह उस बात को तुरंत भूल जाता था.

“हसन!” एक दिन उसके स्वामी ने उसे बुलाया. “यह लो एक पैसा. बाज़ार जाकर थोड़ा सा नमक ले आओ.”

हसन ने वह पैसा ले लिया और उसे अपनी ढीले पाजामे की जेब में रख लिया. “नमक,” उसने सोचा. “मैं नमक कैसे याद रख सकता हूँ?” इस बार उसने निश्चय कर रखा था कि जो उसे कहा गया था वह उसे याद रखेगा. “मैं समझ गया,” उसने अपने मन में कहा. “बाज़ार पहुँचने तक मैं इस शब्द को बार-बार बोलूंगा. इस तरह मुझे अवश्य याद रहेगा कि बाज़ार में मुझे क्या कहना है.”

अब हसन के गाँव में नमक का साधारण नाम था 'हिक'. तो बस धूल भरे रास्ते पर अपने जूते घसीटता हुआ हसन बाज़ार की ओर चल दिया और "हिक, हिक, हिक," बोलता गया.

और वह "हिक, हिक, हिक," ही बोल रहा था जब एक जगह रुक कर वह एक किसान को देखने लगा जो एक पुल के नीचे छोटी-सी नदी में मछली पकड़ रहा था.

हसन ने तय कर रखा था कि जो उसे कहने को कहा गया था उसे वह कभी न भूलेगा. लेकिन लोगों को मछली पकड़ते देखना उसे अच्छा लगता था. तो उस किसान को देखते हुए उसने "हिक, हिक, हिक," बोलना बंद न किया.

अब तुर्की के कुछ भागों में 'हिक' का अर्थ होता है 'कुछ नहीं'. तो जिस समय हसन वहां खड़ा 'हिक!' बोल रहा था उस किसान को भी कुछ नहीं मिला.

आखिरकार किसान को उस पर गुस्सा आ गया. “तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए!” उसने चिल्ला कर कहा.

हसन को आश्चर्य हुआ. “फिर मुझे क्या कहना चाहिये?” उसने पूछा.

तब किसान ने कहा, “तुम्हें कहना चाहिये, ‘ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें! ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें!’ तुम्हें ऐसा कहना चाहिए.”

किसान ने हसन को जो कहा, उसे याद रखने को वह आतुर था. सो वह झटपट वही बात दोहराने लगा, “ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें! ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें!” जब उसे विश्वास हो गया की यह शब्द उसे याद हो गये थे तो वह धूल भर रास्ते पर अपने जूते घसीटता हुआ बाज़ार की ओर चल दिया.

“ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें!” चलते-चलते वह यह बात बोलता गया.

रास्ते में उसने एक शवयात्रा देखी. शवयात्रा को देखते-देखते भी वह बुदबुदाता रहा, “ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें! ऐसी पाँच या दस होनी चाहियें!”

भीड़ में खड़े एक आदमी ने हसन की बात सुनी तो उसे गुस्सा आ गया. “लड़के,” उसने कहा, “तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये!”

हसन चकरा गया. “फिर मुझे क्या कहना चाहिये?” उसने पूछा.

उस आदमी ने कहा, “तुम्हें कहना चाहिये, ‘भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे! भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे!’ तुम्हें ऐसा बोलना चाहिये.”

हसन ने उसके साथ दोहराया, “भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे! भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे!” जब उसे विश्वास हो गया कि यह शब्द उसे याद हो गये थे, वह बाज़ार की ओर चल दिया.

आगे जाते समय वह बोलता गया, “भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे! भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे!” तभी उसने अजीब सी गंध महसूस की. उस गंध को सूँघता-सूँघता वह सड़क किनारे पड़ी मरी हुई मछली के पास आ गया. “भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे! भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे!” उसने मरी हुई मछली की ओर देखते हुए कहा.

तभी एक आदमी उस रास्ते पर आया. उसने हसन की बात सुनी. निकट आ कर उसने नीचे देखा. उसे मरी हुई मछली के अतिरिक्त कुछ दिखाई न दिया.

“लड़के क्या तुम पागल हो?” उसने कहा. “तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये!”

हसन पहले से अधिक हैरान हो गया. “फिर मुझे क्या कहना चाहिये?” उसने पूछा.

उस आदमी ने कहा, “तुम्हें कहना चाहिये, ‘छि! कितनी दुर्गंध है! छि! कितनी भयंकर दुर्गंध है!’ तुम्हें ऐसा कहना चाहिये.”

हसन की नाक ने उसे बताया कि यह बात सही थी. यह याद रखने के लिये कि उसे क्या कहना चाहिये वह बार-बार दोहराने लगा, “छि! कितनी दुर्गंध है! छि! कितनी भयंकर दुर्गंध है!”

इन शब्दों को दोहराते हुए वह आगे चला ताकि वह भूल न जाए कि उसे क्या कहा गया था.

जैसे वह थोड़ा आगे गया तीन औरतें हमाम से बाहर आईं. तीनों खूब साफ़-सुथरी लग रही थीं. उन्होंने हसन को यह कहते सुना, “छि! कितनी दुर्गंध है! छि! कितनी भयंकर दुर्गंध है!”

बस, औरतों ने पानी निकालने वाले कलछे ज़मीन पर रख दिए और यह चिल्लाते हुए हसन पर पत्थर फैंकने लगीं, "तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? तुमने ऐसा कहने का साहस कैसे किया?"

बेचारा हसन सच में घबरा गया. "फिर मुझे क्या कहना चाहिये?" उसने औरतों से पूछा.

तब एक औरत ने कहा, "तुम्हें कहना चाहिए, 'अरे, कितना अच्छा है! ओह, कितना बढ़िया है! तुम्हें यह कहना चाहिए."

"हाँ," दूसरी औरतों ने कहा. "तुम्हें कहना चाहिये, 'अरे, कितना अच्छा है! ओह, कितना बढ़िया है!'"

हसन ने झुक कर उनका अभिवादन किया और बोलने लगा, "अरे, कितना अच्छा है! ओह, कितना बढ़िया है!"

तीनों औरतों ने सिर हिलाए और मुसकराईं. और जूते घसीटता हुआ हसन बाज़ार की ओर चल दिया. चलते-चलते वह वही कह रह था जो उसे कहना चाहिये था.

वह बार-बार “अरे, कितना अच्छा है! ओह, कितना बढ़िया है!” कह रह था जब उसने रास्ते में दो आदमियों को आपस में लड़ते हुए देखा. वह कुछ देर रुक गया और उन दोनों की लड़ाई देखने लगा. जैसे ही एक ने दूसरे को घूंसा मारा, वह बोला, “अरे, कितना अच्छा है!” और जब दूसरे ने पहले को मारा तो वह बोला, “ओह, कितना बढ़िया है!”

बस, उसकी बात सुन कर दोनों आदमी इतने क्रोधित हो गये कि उन्होंने आपस में लड़ना बंद कर दिया और हर एक ने हसन को ज़ोर से घूंसा मारा. “तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये!” पहले आदमी ने उसे एक और घूंसा मारते हुए कहा.

हसन घबरा गया, उसने पूछा, “फिर मुझे क्या कहना चाहिये?”

दूसरे आदमी ने कहा, “तुम्हें कहना चाहिये, ‘ऐसा मत करो, महानुभाव! कृपया, मत लड़ो!’

“हाँ, तुम्हें यही कहना चाहिये,” पहले आदमी ने कहा.

अब रास्ते पर चलते हुए हसन यही शब्द दोहराने लगा, “ऐसा मत करो, महानुभाव! कृपया, मत लड़ो!” वह तब तक दोहराता रहा जब तक उसे विश्वास न हो गया कि यह शब्द उसे याद हो गये थे.

बाज़ार के पास एक गली में उसने दो कुत्तों को लड़ते देखा. वह बड़े मज़े से कुत्तों को लड़ता देखता रहा और बोलता रहा, “ऐसा मत करो, महानुभाव! कृपया, मत लड़ो!”

उसके निकट खड़ा एक आदमी बोला, “क्या तुम पागल हो? तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये!”

आश्चर्य से हसन की आँखें पूरी खुल गईं. “फिर मुझे क्या कहना चाहिये?”

“अरे,” वह बोला, “तुम्हें कहना चाहिए, ‘दूर हट, कुत्ते! भाग यहाँ से, कुत्ते!’ तुम्हें ऐसा कहना चाहिए.”

हसन अपने रास्ते चलने लगा. “दूर हट, कुत्ते! भाग यहाँ से, कुत्ते!” ऐसे कहते-कहते उसने बाज़ार में प्रवेश किया.

बाज़ार की पहली दूकान में एक जूते बनाने वाला जूता बना रहा था. चमड़े का एक टुकड़ा उसने मुंह से पकड़ रखा था और खींच कर उचित नाप का बना रहा था. जब उसने हसन को "दूर हट, कुत्ते! भाग यहाँ से, कुत्ते!" कहते सुना तो चमड़े को थूक कर उसने मुहं से बाहर निकाल दिया और गुस्से से चिल्ला कर कहा, "तुम कुत्ते हो! तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये!"

अब तक हसन बिलकुल चकरा गया था. "कृपया मुझ पर क्रोध ने करें," उसने कहा. "मुझे बताएं कि मुझे क्या कहना चाहिए?"

और जूते बनाने वाले ने कहा, "लड़के, तुम्हें कुछ नहीं कहना चाहिए! बस बोलो 'हिक'!"

“ओह, धन्यवाद!” हसन ख़ुशी से चिल्लाया. “यही तो मुझे याद रखना था!”

और थोड़ा आगे आकर उसने नमक खरीदा.

समाप्त